वर्ष 6, अंक 68, दिसंबर 2020
ISSN 2454-2725
Peer Reviewed Journal
Impact Factor: 1.888 [GIF]
बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका
जनकृति
अंक 68
दिसंबर 2020
JANKRITI
Multidiciplinary International Monthly Magazine
Pc: Gordon Johnson
संपादक
डॉ. कुमार गौरव मिश्रा
Editor
Dr. Kumar Gaurav Mishra

इस अंक में ....

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
	अनुवाद	
1.	असम का सांस्कृतिक पर्यटन : अनुवाद और निर्वचन की वर्तमान स्थिति एवं समस्याएँ: उज्जवल डेका बरुआ	1-15
	अल्पसंख्यक विमर्श	
2.	मुंशी ज़का उल्लाह और डिप्टी नज़ीर अहमद के शैक्षिक कार्य: अब्दुल अहद	16-25
	इतिहास	
3.	अकबर की धार्मिक नीति: जुगनू आरा	26-31
	कला-विमर्श	
4.	मालवा लोक जीवन में राम की प्रासंगिकता: डॉ. अर्जुन सिंह पंवार	32-35
5.	भक्तिकालीन हिन्दी रंगमंच में परंपराशील नाट्य शैलियों का योगदान: दीपा	36-50
6.	बुजुर्गों का अकेलापन और हिन्दी सिनेमा: डॉ. आशा	51-55
	किन्नर-विमर्श	
7.	बदलती अर्थनीति और किन्नर समुदाय : परिवर्तन एवं प्रभाव- भावना चोटिया	56-62
	दलित एवं आदिवासी विमर्श	
8.	भारत में जाति समस्या: पूनम गुप्ता	63-67
9.	सुशीला टाकभौरे कृत "नीला आकाश" उपन्यास में दलित जीवन का परिपेक्ष्य- उषा यादव	68-72
10.	दलित शब्द का अर्थ: परिभाषा एवं अवधारणाएँ-डॉ. गोविंद कुमार	73-78
11.	दलित राजनीति का उभार और शिव मूर्ति का कथा साहित्य: कौशल कुमार पटेल	79-84
12.	दलित लोकजीवन का सौंदर्य प्रतीक 'मुर्दहिया': डॉ.राजेन्द्र परमार	85-91
	बाल -विमर्श	
13.	प्रेमचंद की बाल कहानियों में नैतिकता: वंदना	92-96
14.	आर्थिक मजबूती से बढ़ेगा हिन्दी का साम्राज्य: डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'	97-99
15.	बहुभाषी शिक्षा: समता और सामाजिक न्याय की ओर एक कदम: करन	100-105
16.	करोना महामारी और बेरोज़गारी: आरती शर्मा	106-108
17.	आवां : विकलांगता और उसका प्रभाव- डॉ. संध्या कुमारी	109-113
	स्त्री- विमर्श	
18.	हीरादेवी चतुर्वेदी : 'रंगीन पर्दा' और स्त्रियाँ- आरती यादव	114-121
19.	स्त्री पाठ : दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यता- दिनेश कुमार	122-129
	साहित्यिक-विमर्श	
20.	सामाजिक ताना-बाना और स्वर्गवासी- प्रशांत कुमार यादव	130-133
21.	समय के संदर्भ को दर्ज करता डायरी का गद्य	134-141

	(विशेष संदर्भ:मोहन राकेश की डायरी): डॉदीना नाथ मौर्य.	
22.	समकालीन हिंदी कविता का वर्तमान परिदृश्य: शुभम सिंह	142-148
23.	सत्ता, साम्प्रदायिकता और ध्रुवीकरण की राजनीति बनाम समकालीन हिंदी कविता- डॉ.गंगाधर चाटे	149-157
24.	'जारी है लड़ाई' बनाम मुकम्मल आवाज- बृजेश प्रसाद	158-162
25.	कविता का वर्तमान एवं औपनिवेशिकता: डॉ. राजेन्द्र कुमार सिंघवी	163-168
26.	'दायरा और 'कांच' कहानी में सामाजिक और आर्थिक चेतना का द्वंद': ममता	169-178
27.	बीसवीं सदी के उत्तरार्ध से अब तक प्रकाशित नवगीत रचनाओं का अनुशीलन: अशोक कुमार मौर्य	179-186
28.	निर्मल वर्मा के चिन्तन में प्रकृति और पर्यावरण: डॉ. बीना जैन	187-196
29.	'नंगातलाई का गाँव' में ग्राम्य जीवन का चित्रण: सच्चिदानंद	197-204
30.	मुक्तिबोध की जीविका का संघर्ष: 'लेक्चररशिप के लिए मेरा जी अभी भी ललकता है।- रमेश कुमार राज	205-213
31.	गुरु नानक देव की समाज में जीवन मूल्य की शिक्षा: जगदाले अप्पासाहेब गोरक्ष	214-219
32.	'कसप' में अभिव्यक्त रोमान और यथार्थ: शिखा	220-225
33.	'कठगुलाब':एब्यूज्ड स्त्री चिंतन से आगे की कथा: डॉ.वीरेन्द्र प्रताप	226-232
34.	इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों का सामाजिक परिदृश्य और भूमण्डलीकरण: जगदीश सिंह	233-237
35.	अपने वज़ूद को तलाशती स्त्री 'सुहाग के नूपुर'- डॉ शीला आर्या	238-249
36.	श्रीमती यशोदा देवी की कहानियों का वैशिष्ट्य: डॉ. रुचिरा ढींगरा	250-255
37.	'तीसरी कसम' में प्रयुक्त लोकगीत: डा. पवनेश ठकुराठी	256-258
38.	कृषि पद्धति का ऐतिहासिक विकास: डॉ सुशील कुमार	259-267
39.	'सांस्कृतिक व राष्ट्रीय चिन्तक - कवि कन्हैयालाल जी सेठिया': श्रीमति मंजू सारस्वत	268-273
40.	कलि कथा वाया बाइपास में भूमंडलीकरण का प्रभाव एवं प्रतिरोध: सुगता ए आर	274-278
41.	एक माँ के अस्तित्त्व की खोज : '1084वें की माँ '- डॉ.भानुबहन ए. वसावा	279-284
42.	हिन्दी यात्रा साहित्य में रामवृक्ष बेनीपुरी: करुणा सक्सेना	285-289
	प्रवासी साहित्य	
43.	तेजेन्द्र शर्मा की कहानी खिड़की के अंदर-बाहर झांकती वृद्ध मनोस्थिति- मधु मेहता साथी	290-292

Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 68, December 2020

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
(विशेषज्ञ समीक्षित)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
वर्ष 6, अंक 68, दिसंबर 2020

निर्मल वर्मा के चिन्तन में प्रकृति और पर्यावरण

डॉ. बीना जैन

एसोसिएट प्रोफेसर,हिंदी विभाग,

किरोड़ीमल महाविद्यालय,दिल्ली विश्वविद्यालय।

सारांश:

पर्यावरण का सीधा संबंध प्रकृति से है। आधुनिक युग में प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करने और उसे अर्थोपार्जन का स्रोत मानने के कारण पर्यावरण विश्व के पटल पर उभरने वाला एक गम्भीर संकट है जिसने संपूर्ण मानव जाति के अस्तित्व को खतरे में डाल रखा है। पैसा कमाने की अंधाधुंध दौड़ ने प्रकृति के संतुलन में इतना असंतुलन उत्पन्न कर दिया है कि संपूर्ण विश्व अनेक प्राकृतिक आपदाएं झेल रहा है। निर्मल वर्मा इन सब का कारण आधुनिक सभ्यता को मानते हैं उनके अनुसार आधुनिक सभ्यता और ज्ञान विज्ञान ने ही प्रकृति को परिवर्तनशील और गतिशील रूप प्रदान किया। आधुनिक सभ्यता ने मनुष्य और प्रकृति को अलग कर दिया जबकि पहले संपूर्ण प्रकृति एक इकाई के रूप में स्वीकृत थी जिसका मनुष्य भी एक हिस्सा था।मनुष्य की भौतिक लिप्सा, प्रकृति, उसके उपादानों और जीव जंतुओं के प्रति असहिष्णुता पूर्ण व्यवहार ही समस्त समस्याओं की जड़ है। निर्मल वर्मा मनुष्य को प्रकृति का अभिन्न अंग मानते हैं।उनके अनुसार पत्थर,नदी,पहाड़, पेड़, मनुष्य में पवित्रता की भावनाएं और धार्मिक संवेदना उत्पन्न करते हैं मनुष्य का समूचा मिथक संस्कार भी प्रकृति से जुड़ा है। प्रकृति न केवल मनुष्य में सौंदर्य बोध वरन देश-प्रेम भी उत्पन्न करने का स्रोत है। भारतीय संस्कृति की समस्त आचार- संहिता नैतिक मूल्य, आस्थाएं, संस्कार एवं संस्कृति प्रकृति से जुड़कर ही विकसित हुई है। भारतीय संस्कृति का विशेष संस्कार रहा है कि उसने कभी मनुष्य को प्रकृति से ऊपर नहीं माना बल्कि प्रकृति और मनुष्य के बीच एक पवित्र और संतुलित संबंध की परिकल्पना की है जहां दोनों एक दूसरे के प्रतिद्वंद्वी नहीं एक दूसरे के पोषक हैं। उनके अनुसार आधुनिक औद्योगिक सभ्यता ने मनुष्य के इस संपूर्णता बोध और प्रकृति की पवित्रता दोनों को दूषित कर दिया है। आजादी के बाद विकास के पाश्चात्य मॉडल ने भारत की प्रकृति, उसके हरे-भरे जंगलों को उजाड़ने में विशिष्ट भूमिका निभाई। हजारों को अपने गांव घरों से उन्मूलित होना पड़ा। आदिवासियों को जंगलों से विस्थापित होना पड़ा।पाश्चात्य सभ्यता प्रकृति पर विजय पाने में ही अपना गौरव समझती है। प्रकृति के प्रति उसका संबंध आक्रामक है। निर्मल वर्मा के अनुसार जब तक प्रकृति के विरुद्ध यह हिंसा और आक्रामकता की भावना विद्यमान है तब तक पर्यावरण का संकट दूर नहीं हो सकता। वे औद्योगिक सभ्यता के विकल्प के रूप में गांधी जी द्वारा प्रस्तावित हिंद स्वराज्य की हिमायत करते हैं और भारत के सांस्कृतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना को आधार बनाते हैं उनका विश्वास है कि उन मूल्यों के आलोक में ही विलुप्त होती जा रही मनुष्य की अन्तर्हित सम्भावनाओं को जगाया जा सकता है।

प्रमुख शब्द: *प्रकृति, पर्यावरण, आधुनिक सभ्यता, औद्योगीकरण, भौतिक लिप्सा आक्रामकता उपभोग्य वस्तु, भारतीय संस्कृति, अहिंसा ,सहअस्तित्व ,पवित्रता ,देश प्रेम, संवेदनशीलता*